Bhajan ki lyrics

Bhajankilyrics

प्रभु जी मोरे अवगुण चित्त ना धरो भजन लिरिक्स

Downloaded on: May 1, 2025

प्रभु जी मोरे अवगुण चित्त ना धरो प्रभु जी मोरे अवगुण चित्त ना धरो समदरसी है नाम तिहारो चाहे तो पार करो   एक लोहा पूजा में राखत एक घर वधिक परो पारस गुण अवगुण नहीं चित वे कंचन करत खरो   एक नदिया एक नाल कहावत मेलों ही नीर भरो जब दोनों मिलि एक बरण भई सुरसरी नाम परो एक माया एक ब्रह्म कहावत सूर-श्याम झगड़ो अबकी बार मोहे पार उतारो नहीं प्रण जात टरो बोल सांचे दरबार की जय

© 2025 Bhajankilyrics. All rights reserved.